A–0608

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MAJY-502

एम.ए. ज्योतिष (MAJY)

सिद्धान्त ज्योतिष एवं काल विवेचन-01

Examination February, 2026

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (2×19=38)

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सिद्धान्त ज्योतिष को परिभाषित करते हुए उसके महत्व तथा मुख्य परम्पराओं का प्रतिपादन कीजिए।

2. ग्रह किसे कहते हैं ? ग्रहों की 'अष्टधा गति' का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।

3. ज्योतिषशास्त्र के अनुसार 'काल स्वरूप' का वर्णन कीजिए।

4. पृथ्वी का गोलत्व से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए।

5. प्राच्य-पाश्चात्य मतानुसार ग्रहकक्षा का उल्लेख कीजिए।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न (4×8=32)

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. भास्कराचार्य के अनुसार सिद्धान्त ज्योतिष का अभिप्राय लिखिए।

2. मध्यम एवं स्पष्ट ग्रह से क्या तात्पर्य है ? सोदाहरण लिखिए।

3. मन्दोच्च एवं शीघ्रोच्च से आप क्या समझते हैं ?

4. मध्यम एवं स्फुट भूपरिधि का वर्णन कीजिए।

5. मूर्त्त एवं अमूर्त्त काला का उल्लेख कीजिए।

6. भचक्र व्यवस्था पर टिप्पणी लिखिए।

7. सिद्धान्त ज्योतिष में भगण की क्या आवश्यकता है ?

8. ग्रहगति का विवेचन कीजिए।

****